विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथमवर्ष, प्रथमपत्र
किरातार्जुनीयम् - प्रथमसर्ग
पद्यांश व्याख्या

डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

दिनांक - 22/08/2020

सुखेन लभ्या दधतः कृषीबलैः
अकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः ।
वितन्वति क्षेममदेवमातृकाः
चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति ॥ ७ ॥

अन्वयः- चिराय तस्मिन् क्षेमं वितन्वति (सति) अदेवमातृकाः कुरवः अकृष्टपच्या इव कृषीबलैः सुखेन लभ्याः सस्यसम्पदः दधतः (सन्तः) चकासति ।

भावार्थ- (चिराय तस्मिन् क्षेमं वितन्वति) दीर्घकाल से दुर्योधन के प्रजा-क्षेम का विस्तार करने से (अदेवमातृकाः कुरवः) वृष्टि के ऊपर आश्रित न रहनेवाला कुरुदेश (अकृष्टपच्या इव कृषीबलैः) मानों बिना जुताई के ही पकी हुई, कृषकों द्वारा (सुखेन लभ्याः) सरलता से प्राप्त (सस्यसम्पदः दधतः) फसलों को धारण करता हुआ ~~शोभित~~ (चकासति) शोभित हो रहा है।

भावार्थ- इस पद्य में जनता की खुशहाली, खेती की समृद्धि तथा किसानों के सुख का उल्लेख

Scanned with CamScanner

कर उसके प्रजापालन की दक्षता वर्णित की गई है।

पदव्याख्या - सुखेन लभ्याः = सुख से प्राप्त होने योग्य। 'प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम्' से 'सुखेन' में तृतीया विभक्ति, लभ् + यत् (कर्मणि), लब्धुं शक्याः। दधतः = धारण करते हुए, धा + शतृ। कृषीवलैः = किसानों द्वारा 'क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषकश्च कृषीवलः' - अमरकोश। कृषि + वलच्। 'रजःकृष्यासुति परिषदो वलच्'। अकृष्टपच्या इव = खेत की जुताई के बिना ही पके हुए जैसे, मानों वे खेतों की जुताई के बिना ही पके हों। कृष्टेन पच्यन्ते इति कृष्टपच्याः, न कृष्टपच्याः (नञ्), कृष्टम् = कृष् + क्त (कर्मणि)। पच्या = पच् + क्यप् (कर्मकर्तरि)। शुद्धे तु कर्मणि कृष्टपच्याः। सस्यसम्पदः = अन्न की सम्पत्तियाँ, सस्यानां सम्पदः सस्यसम्पदः (ष० तत्पु०), ताः अथवा सस्यान्येव सम्पदः। क्षेमं वितन्वति (सति) = कल्याण करते रहने पर, तस्मिन् - उस दुर्योधन के 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' से सप्तमी। वि + तन् + शतृ, सप्तमी एकवचन। अदेवमातृकाः = वृष्टि रूपी देव पर आश्रित न रहने-वाला, जिनकी माता वृष्टिरूपी देवता नहीं है। देव एव माता येषां ते देवमातृकाः, न देवमातृकाः इति अदेवमातृकाः। 'मातृका' में नद्यृतश्च से कप्प्रत्यय। अर्थात् वृष्टि पर आश्रित न रहकर नदी के जलपर आश्रित रहनेवाले, नदीमातृक। 'देशो नद्यम्बु-वृष्ट्यम्बु सम्पन्नव्रीहिपालितः। स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम्' - अमरकोष।

Date ___/___/______ Page No.: ______

चिराय = चिरकाल तक। तस्मिन् = उसके, दुर्योधन के, 'वितन्वति' शतृ प्रत्यय के रूप का कर्ता।
कुरवः चकासति = कुरुदेश शोभित हो रहा है। 'कुरवः' देशवाचक होने से बहुवचन, चकास् + लट् लकार, बहुवचन।
टिप्पणी - अदेवमातृका से तात्पर्य यह है कि वह देश खेतों की सिंचाई के लिए नदियों पर आश्रित है, दैव पर - वृष्टि पर नहीं।
'अकृष्टपच्या इव' में उत्प्रेक्षा है। 'सम्भावना स्यादुत्प्रेक्षा' ॥7॥ इति।